1938D Satprarupana by Pushpdant or Pujyapad

Bhagvan Pushpdant and Pujyapad Swami (In Jain Siddhant Bhaskar, 1938), and its manuscript.

Written April 1936/Published March 1938.

Jain Siddhant Bhaskar, March 1938, p. 216-224.

मगमानः पुष्पदन्तः अरेर पूर्यपाद स्वामी [लेखन-श्रीयत पंर होरालाल शास्त्री]

ह्यूर्तमान में उपलब्ध होनेवाले श्रुनज्ञान के सर्वप्रध्या लिपियद्धक्यों या उद्घारक भगवान् पुरुषदन्त और भगवान् भूनविल हुए हैं। इनका समय भगवान् महाश्रोर के निर्वाण के लगभग ६०० वर्ष बाद का है। भ० पुष्पदन्त ने सर्वप्रथम जिन्न रचना को लिपियद्ध किया, वह सूत्रा समक 'जीबहुत्या' है। इसके ऊपर प्राचार्य वीरसेन ने 'प्रवत्ता' नाम को टीका स्थुठ हजार इलोंकों प्रमाण बनायी। प्राज इस सिद्धान्तशा झ की 'धवत्त' इस नाम से अधिद्धि है। लोकप्रसिद्धनरा में इस लेख में 'जीबहुत्या-सिद्धान्त' को 'धवत्त-सिद्धान्त' नाम से उस्लेख करूंगा।

भ० उमास्त्रानि के तत्त्रार्थसूत्र पर सर्वप्रथम टोकाकार पूज्यपाद स्वामो माने जाते हैं, हालां कि इसके पूर्व में स्वामो समस्त्रभद्र तत्त्वार्थ स्वप्रण 'गम्धहस्तिमहाभाष्य' के रचिता प्रसिद्ध हैं। किन्तु धाज के उपलब्ध जैन बाङ्मय में उसके अवतरण या उस्लेख न पायं जाने से ऐतिहासिकों को उस के घारितर में सन्देह हैं। कुछ भी हो इस वक्त उस के यायन मुन्ने कुछ नहीं कहना है, उसका निर्माय नो भविष्य में उपलब्ध होनेवाला जैन साहित्स ही करेगा। किन्तु यह तो निश्चित हो है कि तत्त्वार्थसूत्र पर जितनों भी हि० या इयं० टीकार्य उपलब्ध हैं, उन सब में 'सबोधीसिद्ध' ही अवसे प्राचीन मीशिक एवं प्रामाणिक मानी जाती है। पूच्यपाद का समय विक्रम को पांचवीं-छठों शनाब्दी माना जाता है ध्यीर इस प्रकार से मगवान पुष्पदन्त के लगभग पांच सी वर्ष पाद उनका समय उहरता है।

सर्वार्थिसिद्धि की—प्रथम अध्याय के आठवें सूत्र (शसंख्या०) की टोका अपना खास महत्त्व रखती हैं। उसमें पायी जानेवाली विशेषता न राजवार्तिक में प्रध्यांत्यर होती है और न इलोक वार्तिक या सत्यार्थसूत्र की अन्य दि० इये० टीकाओं में हो। इस सूत्र की टीका का गम्मीर एवं गवेषणात्मक अध्ययन करने से पता चलना है कि पूज्यपाद स्वामी के समय कर मगवान् पुरुपदन्त के 'जीवट्टाण' सिद्धान्त का पठन-पाठन बहुलना के साथ प्रचलित था, क्योंकि इस (सत्संख्या०) सूत्र की समय टीका में भवल-सिद्धान्त के मूलसूत्रों का स्पष्ट प्रतिविश्व इष्टिगोचर होता है। में यहां पर केवल सन्प्रव्यपता के कुछ उद्धरण देकर उक्त बात की पुष्ट कर्फ गा---

धवळ मिडान्त—			
सलक्ष्यमा			
१ — अधिमिन्छाइट्टी स्	্য	, vg	ſŧ
ःसासणसम्माइद्वो	"	8	ŧ
क -स म्मामिच्छाइट्टी	,,	ς	स
⊵—श्र संजयसम्माइही	,,	१०	त्र
्- संजन्।संजन्।	,,	,8	सं
५पमनसंजदा	33	१२	भ
७श्रपमत्तसंजदा	,,	१३	मु
् —श्रपुत्र्यकरग ्पविद्वसुद्धिसं तदेसु व्यक्ति			3
उत्रसमा खत्रा	,,	१४	
६ —द्रा शियद्विवादरमांपरागपविद्वमुद्धि-			73
संजन्तु श्रात्य उवसमा खबा	,,,	१५	
५०सुहुमसांपराइयपनिडमुद्धिसंजरेसु			ਜ਼
श्रस्थि उवसमा खना	,,,	१६	
११—उवसं तकसायत्रीयरायहः दुमःथा	37	१७	3
१२- खीणकसोयशीयरायल्डुमस्या	13	86	₹
१३ —स जोगकेवली	;,	१९	स
१४श्रजोगकेवली	22	२०	73
१ ५संतपस्वसाग दुविहो (सह सो-			₹
श्रीधंग् आदेलंग् य	35	Ę	
१६—ऋदिसंस् गरियास्यादेस ऋति			1
शिरयगदी निरिक्रधगदी मगुस्स-			11
गदी देवगदी सिखगदी चेदि	53	२२	f
नेरह्या चड्डानेमु अधि मिच्छाइट्टी			li
सामग्रसम्माद्द्वी सस्मामिन्छाद्धी			
श्रसंजदसम्माइहि त्ति	33	२३	()

सर्वार्थिसिडि

प्रव्यव्स्ट

मध्याद्यक्तिः तासद्नसःयग्हप्टिः तम्यग्मिष्याहप्टिः यसंयतसम्यग्<u>द्</u>दष्टिः **ग्यतासंयतः** मत्तसंयत: प्रमत्तसंयवः प्रपृवकरणस्थाने उपशमकः चपकः ग्रनिवृत्तिवाद्रसाम्परायस्थाने 🕝 उपशमकः च्चपकः मृक्ष्मसाम्परायस्थाने उपशमकः चपकः प्रशान्तकपायबीतरागञ्जस्थः तीग्।कपायवीनराग**ड्यस्थः** प्रयोगकेव**ली** प्रयोगकंबली चेति प्रत्यरूपणा दिधा सामान्येन विदोपेण च

विदेषेण गत्यतुवादेन नरकगतौ सवासु पृथ्वीपु आद्यानि चःवारि गुणस्था-नानि सन्ति

१७—तिरिक्खा पंचसु द्वारोसु अस्थि	
मिच्छाइट्टी सासणसम्माइट्टी सम्मा-	
मिच्छाइट्टी असंजदसन्माइट्टी संज-	तिर्यगातौ तान्येव संयतासंयतस्थानाधिकारि
दासंजद ति सूत्र २४	सन्ति
१८—मणुस्सा चोइसगुणाट्टाणोसु अस्थि	r
मिच्छा०	मनुष्यगतौ चनुर्रशापि सन्ति
जाव श्रजागकेवित त्ति ,, २५	,
१९—देवा चदुसु ट्वाएासु श्रात्थ भिच्छा०	
सास॰ सम्पामि॰ श्रसं॰ ,, २६	देवगर्सा नारकवन्
२० एइंदिया बीइंदिया तीइंदिया	इन्द्रियानुवादेनएकेन्द्रियादिपुचतुरिन्द्रिय
च उरिं० एकम्मि चेव मिच्छ। इट्टिट्टारो ,, ३४	पर्यन्तेषु एकमेव मिध्यादृष्टिस्थान
२१पंचिंदिया० अजोगकंत्रति त्ति " ३५	पंचेन्द्रियेषु चतुर्रशावि सन्ति
२२कायाणुवादेणः ,, ४०	
पुढविकाइया व्याउकाः तेउकाः	कायानुवादेन 🕻 पृथियीकायिकादिषु बनस्पति
बाउका ६ बग्पिक इका ० एक स्मि चेय	कायान्तेषु एकमेव मिध्यादृष्टिस्थानम्
मिच्छाइद्विद्वायो ,, ४१	
२३—तसकाइया बीइंदियप्पहुदि जाव	
अजोगिकंबलि चि " ४३	त्रसकायेषु चतुर्शापि सन्ति
२४जोगणुवादेण॰ ,, ४५	
मण्जोगो वचिजोगो कायजोगो	योगानुवादेन त्रिपु योनेप बयोईश राह
सिएएमिच्छाइट्टिप्पहुडि जात्र सजीग-	स्थानानि भवन्ति
केवलि त्ति "६२	
२५ - वेदाणवादेण०, ९८	वेदानुवादेन त्रियु वेदेषु मिथ्यादृष्ट्याः
इतिथवेदा पुरिसवेदा असिएणमिच्छा-	निष्टृत्तिपादरान्तानि सन्ति।
इट्टिप्पहुडि जाव श्रिशियट्टि त्ति "९९	
स्वंसययेदा एइंदियप्पहुडि जाव	
जाव व्यणियद्वि त्ति ,, १००	'
२६—तेण परमवगदवेदा चेदि "१०९	श्रपगत वेहेषु अनिवृत्ति बादराद्ययो
A Company of the Comp	केवस्यन्तानि ।

२७-कमाराण-वादेणव सूत्र १०८ कोधकसाई माएकसाई माया कसाई एइ'दियापहडि जाव श्राण-यदि सि 200 २८-लोभकसाई एइंदियप्पहृद्धि जाव सुद्दासां गराइय सुद्धि संजद ति " 660 २५-श्वकसाई चउट्टागोस श्रास्थ उव-संतक्रसायवीयरायछव्गतथा स्वंशिवसाय वीम० सजीगरेवली अजोगकेवाल सि 666 ३०--गाताम्बादेम् यस्थि० 865 मिद्रबएएएए। सुद्रबर्एएएए एइंदियपहडि जाव सासरा सम्माइदिङ ति 15 283 विमंगणाएं सिएएमिन्छाइट्ठीएं वा सासग्रसम्गाइद्वीग् वा 888

३१—सन्मामिच्छाइदिष्टाणे निष्णि वि-णाणाणि अण्णाणेण मिस्साणि वाभिणितोहियणाणं मादिअण्णा-णेण् मिस्सियं सुद्रणाणं सुद्रअ ण्णाणेण मिस्सियं औहिणाणं विभंगणाणेण मिस्सयं निष्णि वि-णा-णणि अण्णाणेण मिस्साण वा ,, ११६

३२—ऋाभिभियोदियसासं सुदर्गासं स्त्रोदिसासं असंजदसम्मादद्विप्य-द्वृद्वि जात्र खीसकसाय वीदराग-स्रदुमःथ नि ... ११७

३३--मरापन्नवसासी पमत्तसंत्र-दूषदृद्धि जाव खीलकसायबोद-सग-इदुमत्थ चि ,, १९८। क्ययानुत्राहेन क्रोधमानमायासु मिथ्या-हष्ट्यार्गुनि श्रानियुक्तियादरस्थाना न्यानि सन्ति

लोभकपायं नान्येव सृक्ष्म साम्परायस्थाना-धिकानि अकपायः उपशान्तकपायः ज्ञीसकपायः सयोगकेवजी अयोगकेवली चैति

शानानुवादेन मध्यङ्गानश्रुवाङ्गानविभंगङ्गानेषु मिध्याङ्गाद्यः सारायनसम्यग्टिप्रशस्ति

द्याभिनियोधकश्रुताबाधिज्ञानेषु असंयत-सम्यकःष्ट्रयादीनि जीग्यकपायान्तानि सन्ति

मनःपर्ययशाने शमत्तसंयनाद्यः ज्ञोणकपा-यान्ताः सन्ति ३४-केबलणाणी विसु ठाणेसु सजीग-केंबली अजीगकेवली सिद्धा चेंदि , 588 ३५-संजमाणुवादेखः 1 850 संजदा पमत्तसंजद्प्यहुडि जाव अजीगकेवलि ति 858 ३६—सामाइयहेदोबट्टारालुडिसंज-दापमत्तसंजद्पहुडि द्यशियहि ति ३७—परिहारसृद्धिसं जदा दास् ठारोस् पमत्तसंजदद्वारो अपगत्तः 223 संजददृश्य ३८—सहमसंपरायमुद्धिसंजदा एक-मिम चैय सुहमसंपराइयसुद्धि . 55S संजवद्यारी ३६—जहकेसाव्विद्यस्युद्धसंजदा च-दुलु हार्गेषु "अवसंतकसायवीय-रायहादुमन्था स्तीगुकसायबी० सजोगकेवली अजोग केवित ति 🔐 १२५ ४०—संजदासंजदा एकस्मि चेय संजना-संजन्हायो **८१—ग्रे**संजरा एईदियमहृष्टि भाव असंबद्सम्माहि वि 11. 640 ४२-इंस्याग्यास्य० 11 848 चक्राव्यंत्रणी घडरिद्यापहुडि जान र्खास्प्रकायकीयरा व जुदुमस्था नि " १२० अचक्लदंससी एइ दियाएपहुडि जान खीएकसावनीयरायहरू-11 830 मत्थ त्ति ४३-- ग्रीहिदंसणी थर्स जदसन्माइट्टि-प्पृतुष्टि जान खीएकसायवीयराय छदुमस्य त्ति 128

केवलज्ञानं सयोगीऽयोगश संयमानुवादेन संयताः प्रमन्ताद्ये।ऽर केवस्यन्ताः।

सामायिकच्छंदीपस्थापनाशृद्धिसेयताः प्राप् चादयोऽनिश्चिस्थानान्ताः ।

परिहारविद्युद्धिसंयती धनताप्रमनाध्य

स्थ्यसाम्परायशुद्धिसंयता **एक**स्मिन्तेः मृक्ष्मसाप्यसम्प्रतं

यश्राख्यातविद्वारसुद्धिसंयनाः—उपशांतकः पायादगोऽयोगकंबस्यन्ताः

संयतासंयना एउस्मिन्नेत्र संयतासंयतायाः स्रक्षयना आहो यू चतुर्णु गुणाधानेषु

दर्शनातुवादेन यज्ञेशनायज्ञेस्यास्याः मिथ्यास्ययादीनि कंग्युक्तपायानसीर सन्ति

द्यवधिदरीने व्यस्यतसम्यग्द्रष्ट्यादीनि सीर कपापानतानि

५४—केवलर्यसणी तिसु द्वाणीसु सजीग	7-	
केवली अजोगकेवली सिद्धा चेदि		939
४५ →लेस्साबादेख०	11	633
किएइलेस्सिया ग्रीललेस्सिया काउ- लेस्सिया एइ'दियत्पहुडि जाव		
असं जनसम्माइद्वि ति	>1	138
४६—संडलेस्सिया पम्मलेस्सिया सक्तिग्सिन्छ।ईट्टिप्पहुडि जात्र		
श्रपमत्तसंजद ति	12	134
५७—मुक्कोस्सिया सरिएएमिन्छाइट्टि -		
प्पहुडि जाव सजोगकेवलि चि	28	१३६
४८—तेण परमलेस्सिया	.,	130
प्रयु—भवियागुजायेगाः	**	१३८
भवसिद्धिया एइ दियप्पद्वृद्धि जाव		
श्रजीगकेवित ति	"	135
५०—अभवसिद्धिया एकस्मि चेय मि-		
च्छाइट्टिट्ठागो	11	680
५१—सम्मत्ताणुवादेगाः	11	485
सम्माइट्टीखइयसम्माइट्टीश्रसं- जदसम्माइहिप्पहुडि जाव श्रजीय-		
केवलि चि	0	635
५२—वेदगसन्माइट्टी असंजदसम्मा इट्टिप्पहुडि जात्र अपमत्त-		
संजद ति	u	583
५३ — उत्रसमसम्माहरी असं जदसम्मा- इट्टिप्पहुडिं जात्र उत्रसंतकसाय-		
बीदरागछदुमन्धं त्ति	.,,	188
५४-सम्मामिन्छ। इड्डी एकम्मि चेव		
सम्मामिच्छाइड्रिष्टु।ऐो	71	184

केथलदर्शने सयोगकेवळी अयोगकेवली च

लेक्यानुवादेन कृत्यानीलकपोतलेक्यासु सि-ध्नाहण्ड्यादीनि असंयतसम्यग्रध्य-म्नानि सन्ति

तेजःपदालेक्ययोर्मिध्यादण्ड्यादीनि अप्रमत्तः स्थानान्तनि ।

शुक्लाजेश्यायाँ मिध्यादध्यादीनि सयोग-केवल्यन्तानि

अलेक्या अयोग-केबिलनः । भज्ञ्यातुवादेन मध्येषु चतुर्दशापि सन्ति

कामच्या खाद्य एव स्थाने

सम्यकत्वानुतादेन नायिकसम्यक्ते श्रसंयवसम्यन्द्रष्ट्यादीनि श्रयोगकेवस्य-न्तानि सन्ति

ज्ञायोपशमिकसम्यक्ते **असं**यत-सम्यग्टण्ट्यादीनि अप्रमत्तान्तानि

श्रीपशमिकसम्यक्त्वे असंयतसम्य-म्हण्ट्यादोनि उपशांतकपायान्तानि

सासणसम्माद्दो एक्सिम चय-सासण्यम्माइद्रिश्ण 188 मिच्छ।इट्टी एइंदियप्पहुँहि जाव सिएएमिच्छाइड्डि ति 130 ५५-सरिख्याणुबादेशा० 8000 सर्गोमिच्छ।इट्टिप्पहु हि জার खीएकसायत्रीयरागञ्जदुमस्थ ति 10 808 ५६—असएगीएइ दियपहुडि जात्र असिएएपंचितिय ति 90.9 ५७-श्राहाराण्वादेखः 603 आहारा एइ'दियप्पट्टडि जाव सयोगकंवित सि 808 ट्टापोस ५८-अणाहारा चदुस् विग्गहगइसमावएए। यं केवलीयाँ वा समुग्वादगदाएं अजोग-कंवली सिद्धा चेनि 600

सासादनसम्बर्ग्हाच्टः सम्बङ्गिष्यारहि मिथ्यादाध्यक्षाः स्वास्यान

संज्ञातुवादेन संक्षिपु द्वादशमुण्स्थानारि चोणकपायन्तानि

असंज्ञिषु एकमेव मिध्यारशिस्थानम्

श्राहारातुवादेन श्राहारकेषु मिथ्याहरूया दीनि सयोगकेवस्यन्तानि

अनाहारकेषु विमहगत्यापन्तेषु त्रीणि गुर स्थानानि-मिण्याद्यप्टः सासादनसन्द असंयतसम्यद्यप्टश्च । समुद्रातगत सयोगकेवली अयोगकेवली च

उपर्युक्त उद्धरणों को देखते हुए यह कहने को मन चाहता है कि मानों भगवान पुण्यत्त के सिद्धान्त-सूत्रों का पृथ्यपाद स्वामी ने संस्कृतानुवाद कर दिया हो। किन्तु ऐसा मान लेके पर माँ पृथ्यपाद स्वामी के असमान पाण्डित्य में कोई बहुा नहीं खाता, क्योंकि पृथ्यपाद स्वामें के समय में संस्कृत भाषा का ही सर्वत्र प्राचल्य था। उसमें ही सर्व मतुमतान्त्रन्ति के विद्वान खपने धार्मिक, दार्शनिक, साहित्यिक प्रन्थों की रचनों कर रहे थे और उस समय ब्राह्मणों का संस्कृत-भाषा-पाण्डित्य सर्वत्र विचर रहा था, इसलिए जैनाचार्यों को भी यह इचित प्रतीत हुआ कि जेन बाङ्मय सम्बन्धी साहित्य की रचना भी संस्कृत मापा में ही की जाय जिससे हमारा साहित्य जैननर साहित्य के मुकाबिले में किसी प्रकार हीन न समभा जाय। इसके पूर्व तक सारा जैन साहित्य प्रकृत मापामय था पर पांडित्याभमानी-बाह्मणों ने अपने नाटकादि प्रंथों में संस्कृत के मुकाबिले में प्रकृत मापा का तीचा स्थान दिया खर्यात नीच पात्रों की भाषा प्राकृत रखी और सर्वसाधारण की दृष्टि में प्राकृत हस्की मापा समन्ते जाने लगी तब जैनाचार्यों को भी संस्कृत भागा अपनानी पड़ो।

पाठकराण यहां यह शंका उपिशत कर सकते हैं, कि यह कैसे सान लिया जाय कि पूज्यपाद के सामन लिखांत-सूत्र रहे हैं और उन्होंने उनका संस्कृतानुवाद सर्वार्थसिंड के विया है। परन्तु इसका उत्तर हमें इसी के नं ३१ से मिल जाता है जिसमें मिश्रगुणस्थान के मिश्रज्ञानों का वर्णन सिक्षान्त्र में तो किया गया है पर सर्वार्थसिखि में उक्त बात विलाकुल ही नहीं हो गई है। कोई यह कह सकते हैं कि संभव है, पाठ छूट गया है। पर यथार्थ में पाठ नहीं छुटा है। किंतु जान यूक्त कर यह विषय छोड़ा गया सा प्रतीत होता है। कारण कि पृज्यपाद स्वामी के हृदय में यह तर्क उठा कि सन्यक्तता यो मिश्र्यापना हो 'वर्रान' के साथ सन्यन्थ रखने वाली वस्तुर्ये हैं, यहां ज्ञान में उनका क्या सन्वन्थ? फिर भी उनके हृदय में यह प्रश्न खड़ा ही रहा कि मिश्रगुण्यानवर्ती हातों को 'ज्ञान' कहा जाय थ्या 'छाज्ञान'? यदि ज्ञान मार्ने—तो उनकी गिनती राम्यज्ञानरूप मित्र श्रुंस ज्ञान की गुण्यस्थान संख्या के साथ होना चाहिए और यदि 'छाजान' मार्ने तो उनकी गिनती कुमति कुमति कुमति के गुणस्थानों के साथ की जानी चाहिए? पर वे तो उने एकदम ही छोड़ गए हैं जो कि एक विचारणीय यात है। परन्तु धवलसिद्धांत के गूल स्वत्रकार तो उसे यहत ही स्पष्ट स्वत्र-डारा (स्वृत्र नं० ११६) उस वात को प्रकट उसने हैं कि इस मिश्रगुणस्थान में जब मिश्रमाव है, तिथ सन्यक्त्व है, तो फिर उनके ही छान प्रशिक्षान भी क्यों न मान लिया जाय। इसीलिये उन्होंने उस वर्तुसार ही सूत्र में निवद किया है।

श्रुतसागर सूरि ने भी श्रुतसागरी टीका में इसी स्थान पर निल प्रकार से शंका उठाकर इसका समाधान करना चाहा है, पर वे भी इसका उचिन समाधान नहीं कर सके हैं। क्योंकि जो समाधान किया है उसकी पुष्टि किसी सिद्धांतमंथ से नहीं होती, विलेक विरोध ही आता है। वह संश इस प्रकार है:—

"सायगिष्याहृष्टेक्षांनमक्षानं च केवलं न संभवति, तस्याक्षानत्रयाधारत्वात् । उक्तं च—
'मिस्सेग्गाणक्तयं मिस्सं अग्रणाणक्तपयोति ।' तेन क्षानानुवादे मिश्रस्यानभिधानं, तस्याक्षानप्रकृपणायामेवाभिश्रानं कातव्यम् । क्षानस्य (१) यथावस्थितार्थविषयत्वाभावात् ।"

यह बात तो विलक्कत स्पष्ट हो है कि श्रुतसागरी टीका विलक्कत ही सर्वीर्थसिद्धि का शब्दशः अनुकरण करती हुई लिखी गई है, जिसका अर्थ यह होता है कि श्रुतसागरसूरि के हृदय में भी यह शंका उठी कि पूज्यपाद स्वामी ने इस मिश्रगुणस्थान में झान या अज्ञान का तिम्पण क्यों नहीं किया ? उसका समाधान उन्होंने उक्त रूप में करना चाहा है, पर यह एक आश्चर्य की ही बात है कि स्वयं ही सिद्धांतसूत्र का उद्धरण देते हुए उन्होंने मिश्रगुणस्थान में मिश्रज्ञान कहने का साहस नहीं किया । क्योंकि उनके ध्यान में संभवतः यह बात सामने रही गाल्म पड़ती है कि यदि इम इस गुणस्थान में मिश्रज्ञान मानेंगे तो लोग इसे पूज्यपाद

की त्रुटि सममें में या फिर इमारे ही कथन को अप्रमाण सममें में । इसलिए उन्होंने उस बात की ओर संकेत मो किया, सिद्धांतमूत्र का उद्धरण भी दिया और एक इलका सा समाधान मो कर दिया । जो इन्छ भी हो पर इतना तो इस बात से पता चलता हो है कि श्रीपूर्यपाद स्वामी के सामने सर्वार्थसिद्धि रचते समय धवलिए द्वांत के मूलसूत्र अवश्य थे। इस बात का और भी प्रयत्त समर्थन आमें की संख्या, चेत्र आदि प्ररूपणाओं के देखने से बखूर्या हो जाता है जिसका यह अर्थ होता है कि आज से डेड़ इजार वर्ष पूर्व इस सिद्धांतप्रथ का पठन-पाठन बहुत जोरों से होता रहा है और होना ही चाहिये था—वयांकि यहां अपूर्विश्व तो इमारे महर्षियों ने विरासत में सौंपी है।



भगवान् पुरुष दल और ब्रूज्य पाद नामी

वतमान है उपल क्य हो ने बाले भ्रुत शान के स्वर्थ प्रथम — लिपि-बहु-कर्ता या उद्घारक भाग बान् एष्परल और म्ह भ्रिकिस-अहार के हुए हैं। इनका समय आयान महाबीर के निर्वाण के स्मामा द्वा वर्ष वार्का है। आवान एष्परंत्र ने कर्व प्रथम जिस स्पता हो लिपि-बह् किया, वह स्माल क 'जीवग्रुण 'है। इसी के उत्पर आनार्य बीर स्ते के द्व हमार श्लोक प्रमाण 'ध्वला ' नाम की टीका बायी, जो दि आज 'ध्वल कि होन्त ' नाम के प्रसिद्ध है। लोक प्रसिद्धिना में रस्त के रव में 'जीवग्रुण किहान ' को 'ध्वल किहान नाम के ही उत्ते व करें? ।

मन उमास्माल के तत्मायिक पर समी प्रथम ही मान कार प्रभा पार स्वामी माने जाते हैं। हालां के - इत्तरे र्व में स्वामी समत्त भाद , तत्मायिक जाता के उपलब्ध जेन महामाध्य के स्वापित प्रारेत है हैं। किला आज के उपलब्ध जेन माड़ मम में उसके अम्मरण या उल्लेख न प्रारे जोने स्ने ही तह्मा ही , इस तम्म उसके नायत हु के दु रह नहीं कहा है। इसका निर्मित में उपलब्ध होने वाला जेन काहिल ही करेगा। किला महता निर्म्मित ही कि तत्माय स्त्र का प्रतिहा कि में प्रारा किला महता निर्म्मित ही कि तत्माय स्त्र कि कि ना प्रारा किला महता निर्म्मित ही कि तत्माय स्त्र कि कि ना प्रारा किला महता निर्म्मित ही कि तत्माय स्त्र कि कि ना प्रारा किला महता निर्म्मित कि माने जाती है। प्रभ पर का सम विद्रम भी पांच की हिरी प्रारा कि माने जाती है । प्रभ पर का सम विद्रम भी पांच की हिरी प्रारा कि माने जाती है जी र इस प्रकार से भगवान प्रवप के लगाभा प्रारा कि बाद उनका समय हहरता है।

सवाद रिसिंद की — प्रथम अध्यय मे आरबेंस्ल (सत्तंत्र्याक्षेत्रक) बीटीका अपना कास महत्वर खती है। उसमें पामी जाने वाली विशेषवा न राजवानिक में दासि मीचर होती है जेंगेर न श्लोक वार्तिक मा नामाक्ष क्रूल बी अन्य दिव प्रवेव टीकाओं में ही। इस स्तूल भी टीका का गम्भीर एवं गविषण लक्ष अध्ययन होने से पता-चलता है कि प्रज्यपाद

हान हा कि होना सक्ष्याण मही भिन्दि उपम अस्मान है र आनेन निन्दराहरी ए निश्मार कि:

र सामग्र सम्भाद्वी — सामग्रह सम्भाद्व सम्भाद्वी । इ. सम्भामिन्द्राद्वी — सम्भाद्विमण्यादाह्यः

४ असेनद समार्शी १० असेयत सम्यन्धा है:

४ संजया संजय ११ संयवा संगतहा

६ पमतसंजदा १२ प्रमत्तसंभवः

७ अप्पन्त संजदा १३ अप्रमत्तसंयतः

= अपुञ्चकरण पविद्वशाद्धे संप्रदेश अपूर्वकरण क्रम्म स्पाने उपशामकः अन्य उवस्त्रा रवका १४ सम्पर्कः

९ अणि महिनारर को काष्ट्रपनिदुस्ताह्न - आनेदाक्त नादर साम्प्रम्य स्याने भीजदेस्तु अन्ति उनसम्भवना १५ उपत्रामकः स्वपकः

१० खुन सीपराद्रम प्रविद्व साहित्याहेषु। स्ट्रम साम्परायहभाने उपशानकः उत्तरिष उपसमा स्वमा १६ स्वयं र

११ उनसेत दसायवीमराय इंदुमस्य १७ उपशाल प्रधाय नीतराग इंद्रास्यः

१२ जीवा कराय बीयराय हुदुमत्या १० सीवा कसाथ बीतराम सुप्तस्यः

१३ राजीम मेवली १९ समीम के बली

१५ अजोग देवली २० अमोगरेवली चेत्र

हमक शिद्धान में २१ वें नम्बर का स्त्र ' शिद्दा-वेदि ' हैं. जिसका कि 'जीबड़ान (जीवस्पान) है लिहा ज़र्स होना उनके श्रमक हैं। फिल कुथ पार स्वामीन सुराह्मान की हाहित से उस्त की बोर हिंगा वह मस्मान ही' समाभी और अधीम देवली के नाम के अभने ही 'शते' शब्द देकर के हस्त का ता की माना है। जरही है

१६ संतपस्वाण दुविही णिद्सी स्वयंत्रपणा दिनिया को देन ६ कामामेन विशेषण न अधिक आदेसे कय १६ उत्तरेसीण गरियाणुवादेण २२ विशिषेण गत्यनुवादेन नरक. चोरइया चउराणेस् अत्य-क्रिया गरी सकी स्पिन्य शियानि उर्री नास्तातमा रही तम्मा निन्छा रही -या चारि छणस्था नाम नाम स्नि अशंजर्तिमाइ१हरिन १७ तिरिक्मा पंचस् शुणेसु अस्य - तिर्थणाती तान्येव संयतासंयत मिन्द्रशाद्वी मासणसमादरी सम्मामिक स्याना सिकानि सिक रही असंजदरनमा० संजदासंजदानि २४ १८ म्युस्का नीद्र अवद्वाणे कु अस्य- म्युष्यगती न्युर्शापि क्रि किन्द्राव अजोम के बलिने २५ १९ देवा न्युस्त हालेषु अस्यि मिन्द्रशा देव गरी नार क वत् स्तास्त्र विस्ताप्ति असंव्यास्त्र २६ २० एइंदिया वी इंदिया वीइंदिया नाइदिय । इन्त्रिया न्नादेन-एके न्युयादि बु-चतुरि-एक्रामिन-वेथिनिन्द्रशाह हिराणे द्र न्त्रियपयोत् षु एक्सेव नियाह सिर्पाम २९ पंत्रिया ... अजो गरेषालिन ३५ पंन्ये न्यु ये षु न्यत्रिशापि स्तिन २३ कायान्यवादेग । ४० कायानुबादेन शियानीकार्य कारिक पुरविकाइया आउका तेषका वाड- क्रिकेन नार्पात कामाने क्रिकेन या विषया एक कि नेय किया कि या शिक्स स्थान उरि हुए २३ तक भार्या वीरंदियप्हिरिजाव अस सामेषु पहुर्रश्णी कानि अजीग केक्षिति ४२ अन्याम् करेक्ट्र ज्ञण जीनो वन्त्रिजो क्रयजोगो स्रिक्टि योगानुबादेन जिबुयोगेयुनमोदश किन्यार्षिण हार जाव स्जीगरेवातीने द्र एकस्पाना नि भवाति । २५ वेद्युय्वादेशन उत्मिवेदासुरिक्त वेदा अक्रिका मि- वेदानु वादेन किष् वेदेषु न्या राष्ट्रिया हारिजाव अणियादिति १९ नियाहिस्यायानियाति -णानुंखय नेद एइंस्थि पहिन जाव नार्य सिमाने सानि अभिगयारि न २६ तेण प्रमाण्यतेशन्वीर १०१ अपनातवेदेषु अतिशतिकाद्याः द्ययोग केवल्यन्तरीन

२७ क्लामणुनादेग ० १०५ द्रवायानुवाये न क्रीप मान मायाक नीचायराई भागन्याई भागन्याई निष्याद्ध्यादीन अनियनि वाद् एरंदिमप्पद्रिक जावआनियिति १०९ स्थाना नारिन रान्ति। २० लोभ प्रकार एइं दिमप्पहाडि जान- लोभ क्षाये तान्ये व स्तूरमकार खुरमक्तंपरगडम्खुई संजयभत्ते ११० राय म्या नगि सक्तान २९ अन्थतार् -यउद्वाणे भन् अनिय उवसंत यतार असमाय: - उपरान्त द्याय, व्यीण > बीमनाम क्रयुम्बा, स्वीण क्षमामनीयमाम - द्रकामः विमान वर्णी अधीमा हेवली -क्रदु मत्या, मजोगर्र वामी अजोगर्भना जिले

३० णाणामु वादेण उतिस्य ० १९२ ज्ञानातुकादेन मत्यज्ञान श्रुताज्ञान-

मिर अवनानी सुद्अवनानी एरंग्देम विभी ज्ञाने व मिर्यादिस साम्भन प्रारं अय मामण मनाइ। देने ११३ लम्पार हि श्रवासि । विभागाणं सिकामिन्यराहरीणं का मामम सन्मार्द्रीणं-ना

39 समानिन्यकार्भेराने निक्नि वि जाणाची अन्नाचेन मिस्ताची-आक्री विवोर्दियवार्गं मादे अठमावारा मिरिसमं खिर्मानं खुर्अनमानेम निस्निनं, आह जामं क्रितानामें मारियमं तिनेवादि वाकानि अव्यानिय निस्तानि वा

३२ अगिनी नेगरियणानं पुर्वाणं माहि आमिनि ने पह सुता वरियहाने द णामं अतं अत्मार्भिकार्भिकार्भिका जा व- अतंत्रत सम्प्रण्टकार्भितं स्त्र रवीण समाप वीद्राम स्वप्नार्म स्वानात्मे स्वानात्मे की के ।

३३ भग पज्नताको पमनतंत्रस्यकः मनः प्रभे शाने प्रमन्तरंथताद्यः डिजा परवीणक्सायवीद्याम छुन - क्षीण भषायानाः क्रीन ।

३४ नेवजनानी तिस्हानेस्-सजोगः च्रेयका शाने समार्गा उभोगास्त्र नेवजी अमोगभेषानी शिह्य-मेरि

१२० संमम तुलदेन संयता जन-३५ मंजमाणु वादेग ७ संज्ञा पत्रत्तासंज्ञद्यातृति जायअजीग - नादमेऽ योग हेय रूप ना केनात्में। ३६ नामार्य रेदो बराबण छाहिसंस्तरा निमार्थ हरेदो पर्यापना छहिसंस्ताः पसत्तरं जदप्य हारिजा व आधायरिति । प्रम्तादेषा डिन्टिति स्पाना नाः रू मरिकर लुद्धिसंज्या देख्यु राके से - परिकारिय शिद्धिसंय ता प्रमता -पमस्ते जर द्वाको अपमतसंगर द्वाको । अननाश्च 2 ३२ सुहम तापरा मश्रीदृषं जरा एड्डिमानेय स्त्रमा हाम्यापश्रीद्वंयवा एम्सिन कुमतंप्रायम्बर्द्ध संजयक्वा १२४ लेख स्त्रम ताम्प्रायस्का ने । १६ जलकम् विलास्तु हिंकेन रान्यु सु- यभावन त निहार श्रीह संयमः रामेन उपतंत इसाम वीयराय क्षुत्रस्ता उपशाल इसायादके उपोग केव-स्तीन कलाय वी प्रशास खदुमत्या दाजीगा व्यक्ता. भे पतारी अजेग भेगाति न १२५ ४० दंजदा संजदा व्युक्तिन्येय दंजदा हंज- संयतासंयता व्यक्तिनेव दंयता १२६ संयवस्थाने कि अवंजय एश्रेयप्पुति अवं अवं अवं अवं आरोष्- पतुर्व अगस्माने , जद तन्त्राश्चेत्र १२७ दु । ४२ दंस्तामुकारेण । १२८ दर्शनानुकारेन नाह्नुदर्शनानाह्नु न्य म्युदंसणी अवशिदयपाकृति आव दर्शनको सिष्टा दृष्टका दी न जीनकताम वीयराम स्टूमन्यारीन १२९ इतीमक कायाकार ने संति अन्य स्यप्दांनि एरंप्ट्रिय चा क्री-जाबरमीन स्काम मेश्समा धुकुम्पानी १३० अगिहदंत्रको असं मद्तमारिक्ष्मारी अवस्थिति ने आरंथन क्यार विचार अन्ति अकाम वीद्राण च्युमस्मारीत सिन द्वीक म्ह बाया कारे । १९४ देवल देखारी तिस्तु द्वाकार् स्त्रकाण के वल दर्शन स्थीन के वली-देवली अनेगदेवली विद्वाचिति । अभीग के वली -

१३३ व्येशमनुनादेत हुका की व्यक्तीत-४५ लेखानुनारेण किन्द्रलेश्या नीजिया नाउले- देशाषु मिनमद्द्यादीने अहंबत-सिन्या- एरंदियपाद्विकाम असंगद - सम्यवद्वयामानि मति तम्माशके ने । ४६ ते असिका प्रमा के विवास सिका ने तेन , पदा मे प्रायो मिका देशना दिन मिन्यारिक्षिरि अयभाममंत्रमान अनुमम्हण ना नाहने ४७ खुडू लेश्या अण्लिनिन्द्रा शहे खुरि एक लेशामां निष्वाद्ध्यादीति अय तजीग देवाला न १३६ विमामसेयल्य कारि ४२ तेन परमलेस्विया १३७ अलेश्वा अधीमकेषात्म । ४९ भाविषाणु नारेका १३८ भवानुबारेन भव्येषु न्युर्शाप भविति हुम र्मेदिषप्रिड जाव स्तिन 1 अज्ञान हैवालिन 136 २० अभवानिद्या एइकि चेय-अभवना द्वारमण्याचा किन्छारिद्वाने 980 प्र कम्मना व्यापेण - ० १४१ क्राम्स्यानुवारेन क्राम्स कम्मने तमारही सरम तमारही अहंजर- अहंपत तम्यायहकादी ने अकोग-उम्मार्ष्टुप्रार्थिक अनेगारेयाताते सेयल्यकाने कारेता ५२ बेद्रा तम्मार्टी असेजद तम्मार्टेड - श्लोके प्राप्तिक तम्मक्ते असंस्त व्यक्तिताय अपमन कियानि १४३ सम्पाद एक्या दीनि अनुमनानारिन ५३ उन्तमतामार्डी असंज्ञातमार्ग्ह- को वशामिक सम्यक्ते असंमत-पहुंडि जाय उन्तेतर्वाम भीर् रागा - तत्पारस्थ्या दी ने उपलाम केवाया ध्य पुत्रास्वा स नित्र रहा १४ तमा नि-व्याहि एक्सिन-वेब -वाकार्त सम्पारितः वामा किन्यार्ट्डी एरंग्स्ययुक्ति ना स क्षाचित्र किन्यार्ट्डिस 986

सं बातुकारेन संरक्षाम् क्षायशास्त्र 740 व्यक्तिमानु सादेग व इणानाके सीणस्थायकारी सकारी-मिक्सार्डियापिड माय क्रीन इसाय नीयराम अस्पूत्रस्तार ते 949 उन्हें। जा मु एकोच क्रिया शहरणाल दर् अम्ला हर्नेद्रमण्डाहर भार अविका के के दिया है। 942 आराग्नुनादेन-आराये व मिन्या उनारा रागुकारेग । 162 अग्राम वर्षियपाद्रिकाय अनेगा देशिकोते। दृष्ट्या दीवित लगे असे ग्रामानित अनाहारने व निरहारमायने वृत्तीक रूर अधाराम सरिवेश्यास - द्रिकाशार-एगस्यानारने कियाग्रीसः लामयन तमायकाका रेयजीकां न त्युक्तर क्यारा दि, अदं यत सम्मारी दिश्च मक्तं अनोमहेवानी विक्र केरि बाह्य तार विना मेवती-अभेग भीयती च

उपर्देस उद्यों भी देशने किए यह यह के भी मन बाहता है कि माने भागत एजपदम के विद्याल ख्यों का प्रभागद सामी लेल्ड्बामुकारकारिक हो-। विल हेका कान को ने पार्थी कामकार स्मामी के अक्रकारण जानिस्म में केरिनशात की सामा , को नह पूज्य कार स्वामी के समय में संस्कृत आषा का की सर्वेक छा बत्य था उन समय लभी मरमकालों के विद्वार अपने र नामिके स्क्रिक एवं लाहरेसक मनेंग की ज्या न्यू के छंट्या भारत ही भी रहे थे , क्रोंभि उस लगम शास्त्रों का वेट्यून अवा पाणिड तम सर्वात विकार महारा केरे इसी किए जनना में देन्से वरी प्रतिक किए कि अंत काइमार किकाबी कारिया भी स्वाम भी कंदित भारत की भी का पान विकास का का रमारिया में ने वर का हता के दिस्मा बाले में भिनी एका हीन म कामाणाय (उन्ने दर्जन म कारा जेन सारित्य प्राकृत अभामय का । पूर्ण दिना जिसी मार्से मे अन्ते मामारी मुन्यों लेखत है सिदारिय में शक्तमा की मैकास्मान दिया अर्थात् भीन कर्का भी आ भा छादुन रायी अरि कर्यकातार्थ भी दार्टिमं प्राप्त्व हर्वितामक कामी कार कारी स्वर्भनानाथीं द्रामी संस्काता अपनामा पुरि

के नाह्य गठा - यहां यह शंका उपस्पित अपनकत हैं कि पर इसे भन्नियानाय - कि इस्पाद है कमने विद्वाल खन-रहेरें उते उन्होंने उनका हंस्डुल तुकाद कर्याप कि दूर्न दिया है। गूल राक्ना उत्तरकों इसीनि लोख दे नम्बर देश है जिला काता है जिसमें कि निम्म हुए ह्यान के किया होतें। का वर्णते विद्वान असन में वे किया गार् है , य स्वी पितिह में उत्स्वात बिलबुल ही नहीं रीगरिट । कोर्डियं पर करत के हैं कि निम्बर , पार पहर-गम रे । निमया में निम नहीं खूरा है , मिल्लात ब्रूफ मर महिल्य की उन अपका प्रीव से वा ही। आका हि- ब्रेंस कद लामी के वहेंगा शिक हर्म में यह वह उठा - कि लाम. इयता का किएमपाता है। द्वित के किय क्रिक्ट रखने नाली वृह्तरें हैं, यह दान में उक्क का नाम कर १ फिल्म उनमें ध्यम में यह छक्त रवड़ा शी रहा कि किया गुका स्कान वर्ती-क्रोतें की 'क्रान ' इहाजाय, या — अहात १ मदि क्रानमोन ते उनकी जिनती तम्मर शन दूप भी विश्वत कार भी एका स्थान में देन में तस्य हाता न्यारहर (क्री-याद 'यहात 'यात', के उन्मी कि नती दुनि दुरुत कार है हिम्मानें है निय ही जान ना हिए प् बुद्यभी टी न उन्होंने वे एक एम ही प्लेड दिन हैं - जा कि एउ विकारिय कर है १ मल- धावान निद्याल के मल-म्बरा र के करत ही सबस्य कार (स्त्रानं पवद) उत्त बाव की एकर मिर्ट मिर्म निम्म सम्मान में जन किया भाव है, निका स्राज्यकर है ते दिर इन दोने के ती द्वात्य मिया शामभी केंत्र मान लिया जाय ? उत्तरलि उत्तरे उदि तरम्मा श रामी निष्टि किया र हमारी रिक उक्त का की द्वीर शुल्लामारी टीका के भी रीटी है क्षेत्रें कर्का - याती स्थान पर दिस्पना देश क्रमित्रकार होते हो ने महातं न के बल तका करें। क्रमित्रकार होते हो ने महातं न के बल तका करें। तका द्वान मायारत्याव । असंन्य-निर्देन काका तमं निर्देन अवकाका तएको नि । तेन होता वरदे मिसास्या कार्य हार्ज

त्यारात प्रत्याया भेवाभियातं शतयम् । रामस्य (१) यदाय -विकास विवयत्यामा नार । "

महकार में किल्युद्धस्पद्ध ही है अत्र मामिरीया विस्तुत री नर्भव किन हुका परन्तु भः अनुस्य काली हुए विक्रमी गृही कि जित्रा अन्य पर छेरा है भेर भूत ताम स्ति दे दिस्मी भी भर-शंदा उड़ी कि प्रस्म पर स्वासी के इसिक्स हरास्था तर्म शान मा प्रकाम भा निरम्पा भेकें नहीं किया ? उत्तार हम्यान उन्होंने-उत्तरपर्मे स्तानार है। प्रमुख्य अवस्तर भी भी कार दिन लवं शीकिहाल दलका रवंदण: उद्यान ने देशन किसाया निमान के किल बात 'इहते हा साहक नहीं मिना- । मेरोपे उने द्यान में मंभवता: यह बार कार्न ही के नाल्य पड़ती है कि-यादे हम रात्र का स्थान के पित्र कात ' कोर्रा, के दोना रहे राज्य-नित्वी द्वार तमरें। - ना- किट हमारे शिक्षण की अधिनान-तननेंगे रातिल उन्होंने जनका वी कोर उपमा भी दिना विद्याल स्माद्य हर्द्या भीदेश को एक हलका का समानान भी सिका । जो हरकार के, मुस्ता के उत्ता के उत्ता के पन गर्म की है दिस्ता पर्द स्वामी के लाकते सकी विकिन्दे श्चित काय न्यवान निहाल भे त्राप वर्ष अवश्म थे। रात कार का ने भी एक कल तमकी आर भी कंप्य प्रभवणा-क्रेमल्या अभि हे दोर्थन के बस्ति हो कारा जिसम् मह अस होता ही हरे उत्तर के उद्गार वर्ष पर - उत्ति विद्यान ग्रम्य शा परन पाठन सुरा नोशे के देश रा रो को देता ही नारिए का को भी परी अम्लम निष्य ते हो राभे महिसी के विश्व हैं में से की हैं

मूल कोर ते द्वार की मार्ग र कर ही द के वह किसे मान पह कारी कारी है जेती देशिय में विश्वी का किसी की की की प्राथम में विश्वी का किसी की की की प्राथम में विश्वी की किसी की की की का किसी की किसी की की की की

भगवान पुरुपदन्त और पूज्यपादस्वामी =============

वर्तमान में उपलब्ध होने वाले श्रुत ज्ञान के सर्व प्रथम चंन=चंम= लिपिवद्ध कर्ता या उद्धारक भगवान पुरुपदन्त और भगवानभूतिविल भटारक हुए हैं। इनका समय भगवान महावीर के निर्वाण के लगभग 600 वर्ष वाद का है। भगवान पुरुपदन्त ने सर्वप्रथम जिस रचना को लिपिबद्ध किया वह सूत्रात्मक जीवव्दाण है। इसी के उमर आचार्य वीरतेन ने 60 हजार श्लोक प्रमाण धेवला नाम की टीका बनायी जो कि आज "धेवल सिद्धान्त नाम से प्रसिद्ध है। लोक प्रतिद्धिवस मैं इस लेख में जीवटठकण सिद्धान्त को धेवल सिद्धान्त नाम से ही उल्लेख कर्षणा।

भगवान उमास्वाति के तत्वार्थतूत्र पर सर्व प्रथम टीकाकार पूज्यपाद स्वामी
माने जाते हैं। हालां कि—इसके पूर्व में स्वामी समन्तभद्र, तत्वार्थसूत्र पर गन्धहास्तमहाभाष्य
के रचयिता प्रसिद्ध हैं। किन्तु आज में के उपलब्ध जैन बाइंमय में उसके अवतरण या उल्लेख
न पाये जाने से ऐतिहासिकों को सन्देह है। कुछभी हो, इस समय उसके वावत मुझे कुछ
नहीं कहना है। इसका निर्णय तो भांकष्य में उपलब्धहोंने वाला जैन साहित्य ही करेगा।
किन्तु यह तो निश्चित ही है कि तत्वार्थ सूत्र पर जितनी भी दिगम्बर या श्वेताम्बर
टीकाये उपलब्ध हैं उन सब में सर्वार्थ सिद्ध ही सर्वप्राचीन, मौलिक एवं प्रामाणिक मानी
जाती है। पूज्य पाद का समय विक्रम की पांचवी —छटवी शताब्दि माना जाता है
और इस प्रकार से भगवान पुष्पदन्त के लगभग पांचसी वर्ष बाद उनका समय ठहरता है।

सर्वार्थ सिद्धि की-पृथम अध्याय के आठवेंसूत्र हैस्तसंख्यादेत्र हैकिटिका अपना खास महत्त्व रखेती है। उसमें पायी जाने वाली विदेष्ट्रेता न राजवार्तिक में दृष्टिटकोचर होती है न श्लोकवार्तिक या तत्त्वार्थसूत्र की अन्य विगम्बर श्वेताम्बर टीकाओं में ही। इस सूत्र की टीका का सम्भीर एवं गवेष्ट्रेयात्मक अध्ययन करने से पता चलता है कि पूज्यपाद स्वामी के समय तक भगवान पृष्ट्रपदन्त के जीवटठाण सिद्धान्त का पठन पाठन बहुलता के साथ सर्वत्र प्रचलित था, क्यों कि इस हैस्ततंख्यादि है सूत्रकी समग्रटीका में धवलसिद्धान्त के मूलसूत्रों का स्पष्ट प्रतिबम्ब दृष्टि गोचर होता है। में यहीं पर तुलनात्मक दृष्टि से केवल सत्पृष्ट्रपणा के कुछ उद्धरण देकर उक्त बात को पृष्ट करूंगा।

धवलतिद्धान्तसत्प्ररूपणासूत्र	नं० सर्वायतिह प्रथमअध्यायतूत्र धर्वे की टीका
। – अत्थि मिच्छाइटठी 7	मिथ्यादृष्टि:
2- सातणसम्माइट्ठी 8	सासादनसम्यगृदृष्टिटः
3-सम्मामिच्छाइटठी 9	तस्य ड्रिमध्यादृष्टिटः
4-अतंबदसम्पाइटठी	असंयतसम्यग्द्राष्ट्रः
5सं संजदा संजदा	तंयता तंयतः
६ - पमत्त्तसंजदा 12	प्रमत्त्वसंयतः
7- अप्पमत्तर्संजदा ।3	अप्रसत्तर्सयतः
8- अपुन्वकरणेप विद्वतुद्धिसंजदेतुर्आात्थ उवसमा खेवा १५ १-अणियाद्ववादर सांपरास्पाविदठ सुद्धिसंजदेतुर्अत्थिउवसमाखेवा १५	अपूर्वकरण स्थाने उपश्चमकः क्षपकः अनिवृद्धिन वादर साम्परायस्थाने उपश्चमकः क्षपकः
10- तुहमसापराङ्यप विटठत् द्विसंजदेतु अस्थि उवसमा खवा ।6	सूक्ष्म ताम्परायत्थाने उपज्ञमकः क्षपकः
11-उवसंतकतायवीयराय छद्गतथा 17	उपशान्तकवाय वीतरागछद्मस्यः
12-डीणेकसायवीयराय छद्मत्था 18	व क्षीणकताय वीतराग छ्दमस्य:
13- तजोग केवली	सँयो गकेवली
14- अजोग केवली 20	अयोगकेवली चेति ।

धंवल तिद्धान्तमें 2। वे नम्बर का सूत्र तिद्दाचेदि है जिसका कि जीवटठाण्ड्रिजीवस्थान्ड्रकेलिहाज से होना आवश्यक है। किन्तु पूज्यपादस्वामी ने गुणस्थानकी दृष्टि ते उसकी कोई आवश्यकता नहीं तमझी और अयोगकेवली के नाम के आगे ही "इति" शब्द देकर के उसबात की समाप्ति करती है।

15- तंतपरूवणार दुविहो णिददेसो
ओयेण आदेतेण य 6
16- आदेतेणगदियाणुं वादेण 22
णेर इया च उददाणेतुर्जात्थ-मिच्छा
इटठीतातणंतम्माइटठीतम्मामिच्छाइ
टठी उत्तंजद तम्माइटिठांत 23

तत्प्रस्पणा व्यितिधा सामान्येन विशेषण च विशेष्ट्रणगत्यनुवादेन नरकगतीसर्वासुपृथिवीषु आद्यानिवत्वारि गुणेस्थानानानिसन्ति

17-तिरिक्शापंचसुटठाणेसुआधित		तिर्यग्गतीताम्येवसंयतासंयत-स्थानाधिकानिसन्ति
सिच्छाइटठी सासपसम्माइटठी सम्मामिच्छाइटठी असंजदसम्म		
संजदासंजदाति <u> </u>	24	
18-मगुस्साचौद्दसगुणटठाणेतुअर्रिय		मनुष्यतौचतुर्दशा यिसन्ति
मिच्छा० अजीगकेव निर्ति	25	
19- देवाचदुसुटठाभेसुअस्थिमच्छा		देवगती नारकवत्
तातणाठतम्मामि०अतं०तम्मा०	26	
20-एडंदियाची इंदियाती इंदिया		इनिद्रयानुवादेन-एके निद्रया विधुवतुरिन्दयपर्यन्तेषु
चळारंदिष एककाम्मिवेयामिच्छाः	\$	एकमेवामध्यादृष्टिस्थानम
टिंठट ाणे	34	
2। पंचिंविया० अजोगकेवालिति	35	मेचे न्द्रियेषु चतुर्दर्शायि सान्त
22- कायाणुवादेण 0	40	कायानुवादेनपृथिवीका यिका दिखु वनस्पति
पुढ विकाइया आउकाठतेउकाठ		कायन्तेषुंस्कोविमध्याद्धाः ट्रिटस्थानम् ।
वाउका०वणका इका०एक मिवेय	मिच	
डाइंटिठ ट ाणे	41	
23- तसका इया वी ई दियण्पहु दिजा	a	त्रसकायेषु चतुर्दशा यिसान्ति
अजो गकेव लि ति	42	
जीयाणवादेण0	45	
24- मणजोगोव चिजोगोकायजोगो तण्णिमिच्छा इथ्टठप्पृहु डिजावर	मैं जी ग	योगानुवादेन त्रिष्ठ्योगेसुत्रयोदशगुणस्थाना निभवन्ति
केव लिति	62	
25- वेदाणुवादेण0	98	
इत्थिवेदापुरसेवदाअरूणिया विठास		वेदानुवादेनित्रषुवेदेषुं मिथ्यादृष्टयाद्यानिवृत्ति वादरान्तिनितानि तन्ति ।
णवंतयवेद एइंदियप्पहु डिजाव		
अणिय टिठ त्ति	100	
26-तेणपर मवगदवेदाचे दि	101	अपगतवेदेर्षु अनिवृत्तिवादराद्ययोगकेवल्यन्तानि ।